दामोदर नदी

डॉ. अर्पिता अग्रवाल

दामोदर घाटी के ऊपरी भाग में मानसून के महीनों में मूसलाधार वर्षा का पानी वनस्पतिहीन पहाड़ियों से तेज़ी से बहकर नदी में पहुंच जाता था, जिससे मिट्टी का कटान होने के साथ-साथ उफनती नदी प्रतिवर्ष ही पश्चिमी बंगाल में बाढ़ के रूप में भंयकर प्रलय लाती थी। विध्वंसकारी दामोदर को जीवनकारी दामोदर में बदलने के लिए एक महान नदी-परियोजना आरम्भ हुई। दामोदर और उसकी सहायिका नदियों की घाटियों को विकसित करने तथा बाढ़ों से होने वाली क्षति को रोकने के लिए बनाई गई यह सबसे महत्वपूर्ण नदी-घाटी परियोजना रही है।

भारत में सैकड़ों वेगवती प्रचंड धारावाली नदियां हैं जिनमें वर्षा या किसी अन्य कारण से एकाएक बड़े वेग से पानी बहने लगता है। ऐसी ही एक वेगवती नदी 'दामोदर' है। यह नदी पौराणिक कथाओं में भी प्रसिद्ध है। लगभग 600 किलोमीटर लंबी यह नदी गंगा की अंतिम धारा 'हुगली' नदी की एक सहायिका नदी है।

दामोदर झारखंड और पश्चिमी बंगाल से होकर बहती है। दामोदर का उद्गम स्थल लगभग 600 मीटर (2000 फीट) की ऊँचाई पर झारखंड में छोटानागपुर के पठारी भाग के पलामू क्षेत्र में है। इस क्षेत्र से बहुत सी धाराएं निकलती हैं, उन्हें अपने में मिलाती दामोदर नदी अपने उद्गम स्थल पर जंगलों के बीच से बहती हुई बहुत सी शाखाओं वाले कांटे की तरह दिखाई देती है। दामोदर की धारा झारखंड के हजारीबाग से होकर गुजरती है, लगभग 600 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह एक अत्यंत सुंदर स्थान है। यहां दामोदर और भैरवी नदी का संगम होता है। भैरवी नदी एक झरने की तरह गिरती हुई दामोदर में मिलती है। यहां से कुछ ही दूर पर देवी 'छन्नमस्ता' की एक शक्तिपीठ स्थित है, जहां पूरे वर्ष तीर्थयात्री आते रहते हैं। देवी रूपणी दामोदर भी अपने रूद्र वेग से शिलाओं, चट्टानों को छिन्न-भिन्न करती आगे बढ़ती जाती है।

दक्षिण पूर्ण दिशा में बहती दामोदर नदी झारखंड के प्रसिद्ध कोयला क्षेत्र धनबाद-गिरिडीह क्षेत्र से गुजरती है। धनबाद और पश्चिमी बंगाल के पुरूलिया के बीच सीमा बनाती दामोदर पश्चिमी बंगाल के बर्द्धमान जिले में प्रवेश करती है। दामोदर नदी पूर्वी मानभूम क्षेत्र से गुजरती है। सदियों पहले कई राज्यों में फैले एक विशाल क्षेत्र से गुजरती है। सदियों पहले कई राज्यों में फैले एक विशाल क्षेत्र को बादशाह अकबर ने राजा मानसिंह को इनाम में दिया था। यह क्षेत्र 'मानभूम' या 'मानभूमि' नाम से पुकारा जाने लगा। मुगल शासन के सूर्यास्त के बाद और अंग्रजों से आजादी के बाद विकास के लिए मानभूम क्षेत्र को कई भागों में बांट दिया गया जो विभन्न राज्यों के अंतर्गत आते हैं। पूर्वी मानभूम क्षेत्र पश्चिमी बंगाल में है। बर्द्धमान जिले में रानीगंज, ओंडाल-आसनसोल क्षेत्र में घूमती हुई बर्द्धमान और बांकुड़ा जिले की सीमा रेखा बनाती है। आगे बढ़ती दामोदर हुगली जिले में पहुंचती है। यहां दामोदर एकदम समतल मैदानी भाग में पहुंच जाती है। इसकी धारा मंद होते हुए डेल्टा बनाने लगती

दामोदार नदी का प्राचीन स्वरूप

दामोदर नदी का वर्तमान स्वरूप

बोकारो दुर्गापुर व चंद्रपुरा में ताप-विद्युत गृह केन्द्र बनाए गए हैं, जिनसे उद्योगों रेलवे आदि के लिए बिजली मिली और दामोदर घाटी क्षेत्र विकसित हुआ। दुर्गापुर, बोकारो तथा जमशेदपुर इस्पात कारखानों, चितंरजन रेल कारखाने तथा सिंदरी उर्वरक उद्योग के लिए पूरे एशिया में प्रसिद्ध है। दामोदर घाटी बाढ़ के आँसुओं से निकल कर बिजली की जगमगाहट से जगमगा उठी।

है। हावड़ा जिले के निकट से होती हुई दामोदर हुगली नदी में मिल जाती है। हुगली नदी आगे जाकर बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है। कहा जाता है कि सन् 1914 में दामोदर में आयी विनाशकारी बाढ़ में दामोदर नदी दो शाखाओं में बंट गई थी, जिसमें इसकी एक मुख्य शाखा मुंडेश्वरी नदी से मिल गयी थी। इससे दामोदर का काफी पानी मुंडेश्वरी के माध्यम से रूपनारायण नदी में जाने लगा है। रूपनारायण नदी भी दामोदर के निकट ही हुगली नदी में समाती है। अंततः दामोदर का सम्पूर्ण जल हुगली में ही मिलता है।

दामोदर उन नदियों में से नहीं है जिनको बर्फ के पिघलने से पानी मिलता है, इसीलिए गर्मियों में यह सूखकर एक पतली सी धारा मात्र रह जाती है। इस मौसम में दूर-दूर तक फैली हुई बालू के बीच से यह छोटी सी जलधारा के रूप में बहती है। वर्षाऋतु में यह अपनी भयंकर बाढ़ के लिए बदनाम है। एक समय में इसे 'बंगाल और बिहार की शोक नदी' या आँसुओं की नदी' भी कहा जाता था। यह अपने प्रवाह क्षेत्र में तबाही मचा देती थी। हर वर्ष बर्द्धमान और बांकुड़ा जिले के सैकड़ों घर तथा हज़ारों एकड़ खेती की ज़मीन बरबाद हो जाती थी।

दामोदार नदी पर निर्मित सेतु

दामोदर घाटी के ऊपरी भाग में मानसून के महीनों में मूसलाधार वर्षा का पानी वनस्पतिहीन पहाड़ियों से तेज़ी से बहकर नदी में पहुंच जाता था, जिससे मिट्टी का कटान होने के साथ-साथ उफनती नदी प्रतिवर्ष ही पश्चिमी बंगाल में बाढ़ के रूप में भंयकर प्रलय लाती थी। विध्वंसकारी दामोदर को जीवनकारी दामोदर में बदलने के लिए एक महान नदी-परियोजना आरम्भ हुई। दामोदर और उसकी सहायिका नदियों की घाटियों को विकसित करने तथा बाढ़ों से होने वाली क्षति को रोकने के लिए बनाई गई यह सबसे महत्वपूर्ण नदी-घाटी परियोजना रही है।

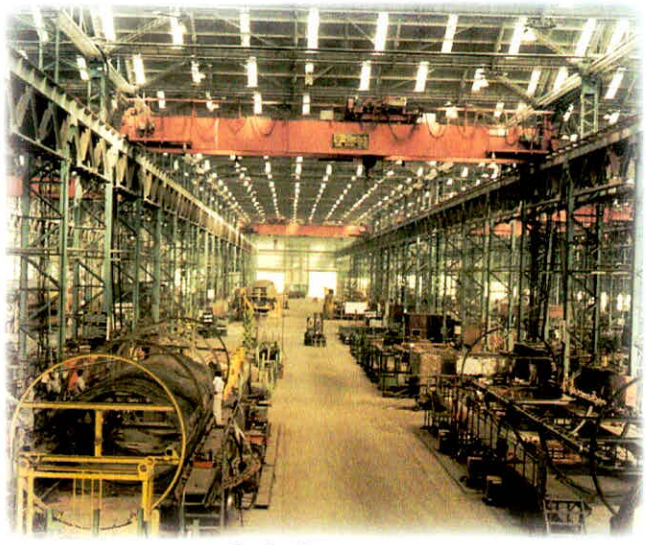

चितरंजन रेल कारखाना

बराकर नदी पर बना तिलैया बांध

इस परियोजना के अंतर्गत दामोदर की मुख्य सहायिका बराकर नदी पर दो बांध बनाए गए। बराकर नदी झारखंड के हजारीबाग जिले से निकलकर बहती हुई पश्चिमी बंगाल में दामोदर से मिलती है। बराकर भी वेगवती नदी है यह अपने मार्ग में आने वाले क्षेत्रों में बरसात के दिनों में भारी तबाही लाती है। बराकर नदी पर धनबाद जिले में 'मैथन' बांध बनाया गया है। इसके पास ही एक पक्षी विहार और हिरण उद्यान स्थित है। बांध के नज़दीक ही 'कल्याणेश्वरी' देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। झारखंड के कोडरमा जिले में बराकर नदी पर 'तिलैया' बांध स्थित है। दामोदर नदी पर बराकर नदी से मिलने से पहले 'पंचेत' बाँध बनाया गया है। दामोदर की सहायिका 'कोनार' नदी पर हजारीबाग में 'कोनार' बांध बनाया गया है। झारखंड के बोकारो जिले में तेनूघाट में दामोदर नदी पर 'तेनूघाट' बांध बना है। पश्चिमी बंगाल के बर्द्धमान जिले में दुर्गापुर में दामोदर नदी पर दुर्गापुर बराज बनाकर नहरों

कोयला खनन कार्य प्रगति

द्वारा पानी को विभिन्न दिशाओं में मोड़ा गया है। इस प्रकार जहां बाढ़ का खतरा टला और सिंचाई के लिए पूरे वर्ष पानी उपलब्ध हुआ, वहीं जल विद्युत का भी उत्पादन हुआ। इस परियोजना से कई उद्देश्यों जैसे भूमि संरक्षण, वन विकास, मछली पालन आदि की भी पूर्ति हुई।

बोकारो दुर्गापुर व चंद्रपुरा में ताप-विद्युत गृह केन्द्र बनाए गए हैं, जिनसे उद्योगों रेलवे आदि के लिए बिजली मिली और दामोदर घाटी क्षेत्र विकसित हुआ। दुर्गापुर, बोकारो तथा जमशेदपुर इस्पात कारखानों,

नदी के किनारे पौधरोपण किया जायेगा

किनारे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होंगे

ड्रेनेज सिस्टम से नदी में गंदा पानी गिराने पर रोक लगेगी

उद्योगों द्वारा विसर्जित अपशिष्ट पदार्थों से जल में प्रदूषण बढ़ रहा है

हुगली नदी पर निर्मित जुबली सेतु

चितंरजन रेल कारखाने तथा सिंदरी उर्वरक उद्योग के लिए पूरे एशिया में प्रसिद्ध है। दामोदर घाटी बाढ़ के आँसुओं से निकल कर बिजली की जगमगाहट से जगमगा उठी।

दामोदर नदी का क्षेत्र भारत का सबसे धनी खनिज क्षेत्र है। खनिजों की बहुतायत के कारण ही यह इलाका भारत का सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है। यहां धनबाद रानीगंज, बोकारो और रामगढ़ में महत्वपूर्ण कोयला खदानें हैं। जमशेदपुर, हीरापुर, सिंदरी, मूरी, घाटशिला, झींकपानी, कुल्टी आदि औद्योगिक केन्द्र यहीं स्थित हैं। दामोदर घाटी परियोजना से लोगों को अनेकों लाभ मिले परन्तु अभिशाप भी कम नहीं हैं। दामोदर घाटी की अकूत खनिज सपंदा ने इसके तटों पर उद्योगों को बसाया लेकिन उन्हीं उद्योगों, कोयला खदानों से निकला ज़हरीला कचरा नदी में बहा दिया गया। ताप विद्युत गृहों से निकली राख भी नदी में डाली जाती रही है। कई सौ उद्योग कारखानों से सजे भारत के इस सबसे अधिक उद्योग धन्धों वाले भाग ने नदी को सबसे अधिक प्रदूषित कर दिया। औद्योगिक इकाइयों से निकले तेल, ग्रीस, राख, रसायनों, ठोस व तरल कचरे और खेतों से बहकर आए कीटनाशकों ने दामोदर के कुछ हिस्से को काला गंदा नाला बनाकर रख दिया। दामोदर की सहायिका नदियों की दशा भी बुरी है। नदी का जहर पानी के माध्यम से लोगों में पहुंच रहा है, जिससे लोग अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो चुके हैं। दामोदर नदी का जल निचले इलाकों के छोटे गाँवों व शहरों में न सिर्फ पीने के पानी का स्रोत है बल्कि इससे सिंचाई भी की जाती है और इसके कारण ज़हर बुझे खाद्यान्नों का उत्पादन हो रहा है।

पीने के पानी का स्रोत नदी का पानी होता है या भूजल जिसे हैंडपंपों व ट्यूबवेलों के सहारे निकाला जाता है। इसी कारण नदियों के किनारे ही सभ्यताएं बसी और नदियों के सूखने पर सभ्यताएं नष्ट भी हुई। आज जब नदियों का जल प्रदूषित हो चुका है और नदियों के आस-पास का भूजल भी प्रदूषित हो चुका है, कई स्थानों पर उद्योगों द्वारा जमीन के अंदर गंदगी डालने से भूमिगत जल प्रदूषित हो रहा है, नलों से आने वाला पानी भी अशुद्धियों से ग्रस्त है तो मनुष्य के सामने पेयजल का संकट उत्पन्न हो गया है। दूषित जल के इस्तेमाल के कारण नित नयी बीमारियां सामने आ रही हैं।

ऐसी संभावना है कि आने वाले दस सालों में पानी के लिए लोग तरसेंगे। आज भी कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां के लोग पानी को तरसते हैं, उनका पूरा समय पानी के इंतजाम करने में बीतता है। दूर से पानी लाने में कई घंटे का समय लगता है। आज बिना फिल्टर किए कोई एक घूंट भी पानी नहीं पीता और जिन्हें मजबूरी में पीना पड़ता है, वे जलजनित बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। पानी की मांग और आपूर्ति का अंतर निरंतर बढ़ता जा रहा है। यही जल संकट का आगाज है।

पानी जनता का धन है। आज निजी कंपनियों द्वारा भारत को शुद्ध पानी बेचने के एक बड़े बाज़ार के रूप में देखा जा रहा है। जनता के इस धन को जनता की उदासीनता ने ही खत्म किया है। जिस भारत वर्ष में दूध, घी की नदियां बहती थी अर्थात जहां की नदियों का जल, दूध, घी के समान पोषक और उच्च गुणवत्ता वाला था वहां के जल स्रोतों की ऐसी दुर्दशा शर्मनाक है। अब उसी जल को रूपयों से खरीदने में आय का एक बड़ा हिस्सा व्यय करना पड़ेगा।

जब प्रदूषण इतने बड़े स्तर तक फैल चुका हो तब उसे दूर करने के लिए हर स्तर के अधिकारियों, उद्योगपतियों और जन साधारण की प्रबल इच्छा शक्ति की आवश्कयता होती है, जिसका सर्वत्र अभाव ही दिखता है। आज दामोदर इस भयावह प्रदूषण के कारण पुनः शोक नदी की श्रेणी में आ गयी है। अन्य नदियों की सफाई की भांति ही दामोदर की सफाई के लिए भी विशेष सरकारी आर्थिक पैकेज की आस लगी हुई है। यानी नदियों के गंदा होने के बाद ही सरकारें जागेंगी उससे पहले उनकी शुद्धता बनाए रखने के कोई प्रयत्न नहीं किए जाएं, क्या यह उचित है? आज आवश्यकता है जन मानसिकता को बदलने की ताकि नदियों को सीवेज व उद्योगों से निकले विषैले रसायनों का अत्याचार नहीं सहना पड़े। जब हम नदियों के शुद्ध जल का भरपूर इस्तेमाल मुफ़्त में करते हैं तब अपने उद्योगों द्वारा निकले गंदे पानी को भी शुद्ध करके ही नदी में छोड़ना चाहिए। पानी का दुरूपयोग न करना, अपने जलस्रोतों को गंदा न करना और वर्षा जल का संचय करना, प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

संपर्क करें:
डॉ. अर्पिता अग्रवाल
120-बी/2, साकेत
मेरठ-250 003
(उत्तर प्रदेश)
ईमेलः fca.arpita@yahoo.com